कुछ सिद्धांत और उनके प्रतिपादक

सिद्धांत	प्रतिपादक
बिग बैंग सिद्धांत	जार्ज लैमेन्टर
सुपर स्ट्रिंग सिद्धांत	स्टीफन हॉकिंग
चतुष्फलक सिद्धांत	लोथियन ग्रीन
भू-आकृतिक चक्र	डेविस
ट्रिपेन संकल्पना	पेंक
पेडीप्लेनेशन चक्र	एल.सी.किंग
हिमानी स्थलाकृतिक चक्र	लुई अगासीज
परिहिमानी चक्र	पेल्टियर
कार्स्ट स्थलाकृतिक चक्र	स्वीजिक
भूसन्नति सिद्धांत	हाल व डाना
सागर नितल प्रसरण	हैरी हेस
महाद्वीपीय विस्थापन	वेगनर
'प्लेटविवर्तनिकी' शब्द	टूजो-विल्सन
प्लेटविवर्तनिकी सिद्धांत	हैरी हेस
हिमानी नियंत्रण सिद्धांत	डेली
अवतलन सिद्धांत	डार्विन
प्रगामी तरंग सिद्धांत	एयरी व ह्वैवेल
स्थैतिक तरंग सिद्धांत	हैरिस
जलवायु वर्गीकरण	कोप्पेन
एकल जलवायु सिद्धांत	क्लीमेट
बहुजलवायु सिद्धांत	टांस्ले
ध्रुवीय वाताग्री सिद्धांत	बर्कनीज
प्रथम मृदा विज्ञानी	वी.वी.दोकाचयेव
'इकोलोजी' शब्द	हैकेल
'इकोसिस्टम' शब्द	टांसले
कोटि-आकार नियम	जिप्फ़
सन्नगर (Conurbatiom)	गैड्स
'मेगालोपोलिश' शब्द	गॉटमेन
नगर की आंतरिक संरचना का संकेन्द्रीय मॉडल	बर्गेस
सिद्धांत प्रतिपादक	
क्षेत्रीय विभेदन	हार्टशोन
कोर-पेरिफरी संकल्पना	फ्रायडमैन
विकास ध्रुव संकल्पना	पेरॉक्स
फसल संयोजन विश्लेषण	वीभर
कृषि क्षेत्र प्रादेशीकरण	ह्वीट्लसे
आइसोडापेन संकल्पना	वेबर
स्थानीकरण त्रिकोण	वेबर
अधिकतम राजस्व सिद्धांत	लॉश
प्रतिस्पर्द्धा सिद्धांत	फ्रेटर व होटलिंग
वृद्धि की सीमाएँ	मीडोज
'भूराजनीति' शब्द	जेलेन
श्रेष्ठतम की अतिजीविता (Survival of the fittest)	हरबर्ट स्पेंसर
नेचुरल सेलेक्शन	डार्विन
सामाजिक डार्विनवाद	रैटजेल
नियतिवाद	हम्बोल्ट व रिटर
'संभववाद' शब्द	फैब्रे
संभववाद के जनक	विडाल-डि-ला-ब्लाश
पर्यावरणीय नियतिवाद	रैटजेल
रूको व जाओ नियतिवाद	ग्रिफिथ टेलर
सक्रियतावाद	ब्रूंज
आदर्शवाद	गुल्के
अतिवाद (Radicalism)	डेविड हार्वे व पीट
प्रत्यक्षवाद	अगस्त काम्टे
मानववाद	किर्क व यी-फू-तुआन
यूनिवर्सलिज्म	पार्सन
मात्रात्मक क्रांति	हैगेट व शोर्ले
व्यवहारिक क्रांति	किर्क व वाल्पर्ट
वर्तमान-भूत की कुंजी	हटन
मॉडल संकल्पना के जनक	हैगेट व शोर्ले

प्रमुख यंत्र व उनकी उपयोगिता

1. ओपिसोमीटर- दूरी मापने का यंत्र
2. रोटामीटर- तरल पदार्थो के प्रवाह की दर मापने का यंत्र
3. प्लैनोमीटर- क्षेत्रफल मापने का यंत्र
4. हाइड्रोमीटर- जल के घनत्व को मापने वाला यंत्र
5. मैनोमीटर- गैस के दाब को मापने वाला यंत्र
6. बैरोमीटर- वायुदाब को मापने वाला यंत्र
7. एनीमोमीटर- वायुवेग मापी यंत्र
8. विन्डवेन- वायुदिशा मापने वाला यंत्र
9. क्रोनोमीटर - समय मापने वाला यंत्र
10. साइनोमीटर- आकाश का नीलापन मापने का यंत्र
11. एक्टीनोमीटर- विकिरण की तीव्रता मापने का यंत्र
12. एयरोमीटर- वायु या गैसों के भार व घनत्व को मापता है
13. फैदोमीटर- सागर की गहराई मापने का यंत्र
14. क्लाइनोमीटर- ये चुम्बकीय नति यानि ढालकोण मापता है
15. रेनगेज- ये वर्षामापी यंत्र है
16. हाइग्रोमीटर- यह आर्द्रतामापी यंत्र है
17. प्रिज्मैटिक या प्रिज्मीय कम्पास- यह चुम्बकीय दिक्मान मापता है
18. थियोडोलाइट- यह दूरी व कोण मापता है
19. सैक्सटैंट- ऊर्ध्वाधर व क्षैतिज नतिकोण को मापता है।
20. थर्मोमीटर - तापमान मापने वाला यंत्र

अन्तर्राष्ट्रीय सीमा रेखाएँ

1. ड्यूरेंड रेखा : पाकिस्तान तथा अफगानिस्तान के मध्य सर मोर्टिगर ड्यूरेंड (ब्रिटेन) द्वारा सीमा निर्धारित अफगानिस्तान इस सीमा निर्धारित को स्वीकार नहीं करता है।
2. मैकमहोन रेखा : 1914 में सर मैकमहोन ने (ब्रिटेन) भारत-चीन सीमा को एक समझौते के तहत निर्धारित किया था। यह 700 मील लम्बी रेखा है।
3. रेडक्लिफ रेखा : यह भारत-पाकिस्तान के मध्य सीमा निर्धारण करती है।

15 अगस्त 1947 को रेडक्लिफ द्वारा इसका निर्धारण किया गया था।

4. हिंडनबर्ग रेखा : प्रथम विश्व युद्ध के समय (1947) में तय यह जर्मन-पोलैंड के मध्य सीमा निर्धारण करती है।

5. मैनरहीन रेखा : सोवियत रूस और फिनलैंड के बीच की सीमा रेखा।

6. मैगीनाट रेखा : फ्रांस द्वारा खींची गई जर्मनी और फ्रांस के बीच की सीमा रेखा।

7. 17वीं समानांतर रेखा : उत्तरी ओर दक्षिण वियतनाम की सीमा रेखा।

8. 24वीं समानांतर रेखा : कच्छ के पास, जिसे पाकिस्तान, भारत-पाक की सीमा रेखा मानता है किन्तु भारत इसे अस्वीकार करता है।

9. 38 वीं समानांतर रेखा : उत्तरी और दक्षिण कोरिया के मध्य की सीमा रेखा।

10. 141^0 पश्चिमी देशांतर रेखा: अलास्का (सं.राअमेरिका) व कनाडा की सीमा रेखा।

11. 49वीं समानांतर रेखा : सं.रा. अमेरिका कनाडा की सीमा रेखा।

12. ओडरनीसे रेखा : पूर्व जर्मनी और पोलैंड के बीच की सीमा रेखा।

13. सीगफ्रायड रेखा : द्वितीय विश्व युद्ध के पूर्व फ्रांस और जर्मनी की सीमा पर दीवारों, मीनारों और सैनिकों चौकियों से घिरी प्रतिरक्षा रेखा जो जर्मनी द्वारा निर्मित की गई थी।

विश्व के देशों व नगरों के परिवर्तित नाम

वर्तमान	पुराना नाम
जापान	निप्पन
हो ची मिन्ह सिटी	सैगोन
सूरीनाम	डच गायना
हवाई द्वीप	सैंडविच द्वीप
ईरान	पर्शिया
इराक	मेसोपोटामिया
मलावी	न्यासालैंड
लेसोथो	वासूतोलैंड
नीदरलैंड	हालैंड
घाना गोल्ड	कोस्ट
इथियोपिया	अबीसीनिया
हरारे	सेलिसबरी
किंशासा	लियोपोल्डविले
थाईलैंड	स्याम
ताइवान	फारमोसा
बेनिन	दामोही
बेलीज	ब्रिटिश होंडुरास
बोत्सवाना	बेचुवानालैंड
मलावी	न्यासालैंड
कोझीकोड	कालीकट
सेंट पीटर्सबर्ग	लेनिनग्राड
चेन्नई	मद्रास
कम्बोडिया	कम्पूचिया, खमेर
जिबूती फ्रेंच	सोमालीलैंड,
जाम्बिया	उत्तरी रोडेशिया
जिम्बाम्वे	दक्षिणी रोडेशिया
इस्तांबुल	कांस्टेंटिनपोल अथवा कुस्तुनतुनिया
वाराणसी	बनारस अथवा काशी
इलाहाबाद	प्रयागराज (प्रयाग)
जायरे	कांगो गणराज्य
मालागासी	मेडागास्कर
म्यांमार	बर्मा
जावा	सुवर्णद्वीप तथा यवद्वीप
पटना	पाटलिपुत्र
बांग्लादेश	पूर्वी पाकिस्तान
मलेशिया	मलाया

विश्व के स्थान और उनके उपनाम

उपनाम (Sobriquets)	स्थान
एड्रियाटिक की रानी	वेनिस (इटली)
लौंग का द्वीप	जंजीबार
सात पहाड़ियों का नगर	रोम
शाश्वत शहर (इटर्नल सिटी)	रोम
नील का वरदान/नील का उपहार	मिस्र
आँसुओं का द्वार	बाब-एल-मंडेब
निषिद्ध शहर	ल्हासा (तिब्बत)
लैंड ऑफ थंडर बोल्ड	भूटान
नदियों का देश	बांग्लादेश
नहरों का देश	पाकिस्तान
स्काईस्क्रैपर्स का नगर	न्यूयार्क
एम्पायर सिटी	न्यूयार्क
अन्ध महाद्वीप	अफ्रीका
स्वर्णिम द्वार का नगर	सान फ्रांसिस्को
क्वेकर सिटी	फिलाडेल्फिया
एंटिलीज का मोती	क्यूबा
विश्व की चीनी का कटोरा	क्यूबा
सफेद हाथियों की भूमि	थाईलैंड
हजार झीलों की भूमि	फिनलैंड
उगते सूर्य का देश	जापान
मध्यरात्रि के सूर्य का देश	नार्वे
प्रात:कालीन शान्ति की भूमि	कोरिया
स्वर्णिम पैगोडा का देश	म्यांमार
कंगारुओं का देश	ऑस्ट्रेलिया
दक्षिण का ब्रिटेन	न्यूजीलैंड
भूमध्यसागर की कुंजी	जिब्राल्टर जलसंधि
मोतियों का द्वीप	बहरीन
पवित्र भूमि	येरूसलेम/फिलिस्तीन
हेरिंग पॉन्ड	अटलांटिक महासागर
संसार की छत	पामीर का पठार
यूरोप का रोगी	तुर्की
यूरोप का अखाड़ा	बेल्जियम
यूरोप का खेल का मैदान	स्विट्जरलैंड
स्वर्निम मीनारों वाला शहर	आक्सफोर्ड
चीन का शोक	ह्वांगहो नदी
पीली नदी	ह्वांगहो नदी
विश्व की रोटी की टोकरी	प्रेयरीज (उत्तरी अमेरिका)
विश्व का निर्जनतम द्वीप (अटलांटिक महासागर)	ट्रिस्ता-डि-कुन्हा

भारत के स्थान और उनके उपनाम

Meghwal's IAS

स्वर्ण मन्दिर का शहर	अमृतसर	सिडनी	आस्ट्रेलिया	डार्लिंग
पाँच नदियों की भूमि	पंजाब	यांगून	मयांमार	इरावदी
ब्लू माउंटेन्स	नीलगिरि पहाड़ियाँ	क्यूबेक	कनाडा	सेंट लारेंस
बंगाल का शोक	दामोदर नदी	वारसा	पोलैंड	विश्चुला
भारत का प्रवेश द्वार	मुम्बई	हैम्बर्ग	जर्मनी	एल्ब
भारत का बगीचा	बंगलोर	बेल्ग्रेड	युगोस्लाविया	डेन्यूब
महलों का शहर	कोलकाता	बगदाद	इराक	टिग्रिस (दजला)
अरब सागर की रानी	कोचीन	रोम	इटली	टाइबर
पूर्व का वेनिस	कोचीन	न्यूयार्क	सं.रा.अमेरिका	हडसन
गुलाबी शहर	जयपुर	लाहौर	पाकिस्तान	रावी
भारत का मसालों का बगीचा	केरल	कराची	पाकिस्तान	सिंधु
भारत का स्विट्जरलैण्ड	कश्मीर	पेरिस	फ्रांस	सीन
डायमंड हार्बर	कोलकाता	लन्दन	ब्रिटेन	टेम्स
सात टापुओं का नगर	मुम्बई	मास्को	रूस	मस्कोवा
जुड़वाँ नगर	हैदराबाद–सिकन्दराबाद	वाशिंगटन डी.सी.	सं.रा.अमेरिका	पोटोमैक
झीलों का नगर	श्रीनगर	बसरा	इराक	दजला तथा फरात का संगम
मंदिरों एवं घाटों का नगर	वाराणसी	कोलोन	जर्मनी	राइन
नवाबों का नगर	लखनऊ	ब्यूनस आयर्स	अर्जेंटिना	ला प्लाटा
उत्तर भारत की अर्थव्यवस्था का मेरूदण्ड	गंगा नदी	मॉट्रियल	कनाडा	सेंट लारेंस
बिहार का शोक	कोसी नदी	न्यू आर्लियन्स	सं.रा. अमेरिका	मिसीसिपी
पूर्व का स्कॉटलैण्ड	मेघालय	वोल्गोग्राड	रूस	वोल्गा
भारत का हालीवुड	मुम्बई	अल कैरो (काहिरा)	मिस्र	नील
इस्पात नगरी	जमशेदपुर	बर्लिन	जर्मनी	स्प्री
छोटानागपुर की रानी	नेतरहाट (झारखंड)	बुडापेस्ट	हंगरी	डेन्यूब
पर्वतों की रानी	मसूरी	शंघाई	चीन	यांगटीसीक्यांग
समुद्रपुत्र	लक्षद्वीप			
दक्षिण का कश्मीर	केरल			
भारत का मानचेस्टर	अहमदाबाद			
भारत का पेरिस	जयपुर			
भारत का पिट्सवर्ग	जमशेदपुर			
ईश्वर का निवास स्थान	इलाहाबाद			
उत्तर भारत का मैनचेस्टर	कानपुर			
भारत का दिल	दिल्ली			
दक्षिण गंगा	गोदावरी नदी			
त्योहारों का नगर	मदुरै			
कर्नाटक का रत्न	मैसूर			
फलों की डलिया	हिमाचल प्रदेश			
राजस्थान का गौरव	चित्तौड़गढ़			
पूर्व का पेरिस	जयपुर			
राजस्थान का थर्मोपल्ली	हल्दीघाटी			
राजस्थान का प्रवेशद्वार	भरतपुर			
भारत का मिनी स्विट्जरलैंड (चम्बा हिमाचल प्रदेश)	खज्जियार			

<u>नदियों के किनारे स्थित विश्व के महत्वपूर्ण शहर</u>

विश्व नगर	देश	नदी
कराकास	वेनेजुएला	ओरीनिको
वियना	आस्ट्रिया	डेन्यूब
ड्रेसडेन	जर्मनी	एल्ब
खारतूम	सूडान	श्वेत तथा ब्लू नील का संगम

<u>नदियों के किनारे स्थित भारत के महत्वपूर्ण नगर</u>

नगर	नदी
आगरा	यमुना
अहमदाबाद	साबरमती
इलाहाबाद	गंगा–यमुना का संगम
कलकत्ता	हुगली
गौहाटी	(गुवाहाटी) ब्रह्मपुत्र
हरिद्वार	गंगा
मदुरै	वैगई
नासिक	गोदावरी
पणजी	मांडवी
उज्जैन	क्षिप्रा
श्रीनगर	झेलम
सूरत	ताप्ती/तापी
अयोध्या	सरयू (घाघरा)
पंढरपुर	भीमा
डिब्रूगढ़	ब्रह्मपुत्र
श्रीरंगपट्टम	कावेरी
विजयवाड़ा	कृष्णा
दिल्ली	यमुना
बद्रीनाथ	अलकनंदा
लखनऊ	गोमती
वाराणसी	गंगा
अजमेर	लूनी

Meghwal's IAS

पर्यावरण संरक्षण से संबद्ध संस्था द्वारा विश्व की विलुप्तप्राय: 10 नदिया

नदियां	महादेश	नदियां	महादेश
1. डेन्यूब	यूरोप	6. सालवीन	एशिया
2. रियो ग्रैण्डे	उ.अमेरिका	7. गंगा	एशिया
3. ला-प्लाटा	उ.अमेरिका	8. सिंधु	एशिया
4. यांग्जे	नेपाल/तिब्बत	9. नील	अफ्रीका
5. मेकांग	एशिया	10. मर्रे-डार्लिंग	आस्ट्रेलिया

विश्व की प्रमुख भाषाएं

भाषा	जनसंख्या (मिलियन में)
1. चीनी/मंडारिन	874
2. हिन्दी	366
3. स्पेनिश	358
4. अंग्रेजी	341
5. अरबी	256
6. बंगाली	207
7. पुर्तगाली	176
8. रूसी	167
9. जापानी	125
10. जर्मन	100
11. फ्रेंच	77

* तमिल विश्व की सर्वाधिक पुरानी जीवित भाषा है।

विश्व के सर्वोच्च शिखर

पर्वत शिखर	स्थिति
1. एवरेस्ट	नेपाल
2. के-2	भारत
3. कंचनजंगा	भारत
4. लहोत्से	नेपाल/तिब्बत
5. मकालू	नेपाल
6. चोओयो	नेपाल/तिब्बत
7. धौलागिरि	नेपाल
8. मनास्लु	नेपाल
9. नंगापर्वत	भारत
10. अन्नापूर्णा	नेपाल
11. गेसर ब्रूम-1	भारत
12. ब्रोडपिक	भारत
13. गेसर ब्रूम-2	भारत

विश्व के प्रमुख बांध

बांध	नदी	देश
नुरेक	वख्श	रूस
भाखड़ा	सतलज	भारत
कुरोबेगावा	कुरोबे	जापान
काबोराबासा	जाम्बेजी	जाम्बिया
करीबा बांध	जाम्बेजी	जाम्बिया
अस्वान	नील	मिस्र
अकोसोम्बो	वोल्टा	घाना
ग्रांड डिक्शेंस	डिक्शेंस	स्विट्जरलैंड
वैजोन्ट	वैजोन्ट	इटली
ओरोविले	फीदर	सं.रा.अमेरिका
हूबर	कोलोरैडो	सं.रा.अमेरिका
वारागाम्बा	वारागाम्बा	ऑस्ट्रेलिया

गंगा में मिलने वाली सहायक नदियां/स्थल

सहायक नदियां	स्थल
अलकनंदा + धौलागंगा	विष्णु प्रयाग
अलकनंदा + मंदाकिनी	नंद प्रयाग
अलकनंदा + पिंडार	कर्ण प्रयाग
अलकनंदा + वासुकीगंगा	रूद्र प्रयाग
अलकनंदा + भागीरथी	देव प्रयाग
गंगा + यमुना + सरस्वती	प्रयाग (इलाहाबाद)

विश्व के सर्वोच्च जलप्रपात

जलप्रपात	देश
1. एंजिल	वेनेजुएला
2. टुगेला	दक्षिण अफ्रीका
3. योसेमाइट	कैलीफोर्निया
4. मर्डल्सफोसेन	नार्वे
5. सुदरलैंड	न्यूजीलैंड
6. रिचेनबैख	स्विट्जरलैंड
7. वोलोमोम्बी	ऑस्ट्रेलिया
8. रिब्बन	कैलीफोर्निया
9. गैवेर्ने	फ्रांस
10. टाइसेफ्लोन	नार्वे

विश्व की सबसे लंबी नदी

नदी	महाद्वीप
1. नील	अफ्रीका
2. आमेजन	द. अमेरिका
3. यांग्टीसीक्यांग	एशिया
4. मिसीसिपी-मिसौरी	उ. अमेरिका
5. ह्वांगहो	एशिया
6. जायरे	अफ्रीका
7. पराना	दक्षिण अमेरिका
8. इर्टिश	एशिया
9. अमूर	एशिया
10. लीना	एशिया

प्रमुख दिवस

भारत पर्यटन दिवस -	25 जनवरी
विश्व आर्द्रभूमि दिवस -	02 फरवरी
विश्व उपभोक्ता दिवस -	14 मार्च
विश्व वानिकी दिवस -	21 मार्च
विश्व जल दिवस -	22 मार्च
विश्व मौसम विज्ञान दिवस -	23 मार्च
राष्ट्रीय नौवहनीय (मेरीटाइम) दिवस -	05 अप्रैल
विश्व स्वास्थ्य दिवस -	07 अप्रैल
विश्व वैज्ञानिकी एवं ब्रहाण्डिकी दिवस -	14 अप्रैल
पृथ्वी दिवस -	22 अप्रैल
विश्व बौद्धिक सम्पदा दिवस -	26 अप्रैल
विश्व प्रवासी पक्षी दिवस -	08 मई
राष्ट्रीय तकनीकी दिवस -	11 मई
जैविक विविधता दिवस -	22 मई
माउंट एवरेस्ट दिवस -	29 मई
विश्व पर्यावरण दिवस -	05 जून

Meghwal's IAS

विश्व शरणार्थी दिवस –	20 जून
राष्ट्रीय सांख्यिकी दिवस –	29 जून
विश्व जनसंख्या दिवस –	11 जुलाई
राजीव गांधी गैरपरम्परागत ऊर्जा दिवस –	20 अगस्त
अंतर्राष्ट्रीय साक्षरता दिवस –	08 सितम्बर
ओजोन परत संरक्षण दिवस –	16 सितम्बर
विश्व पर्यटन दिवस –	27 सितम्बर
विश्व प्रकृति दिवस –	03 अक्टूबर
विश्व पशु कल्याण दिवस –	04 अक्टूबर
विश्व वन्य प्राणी दिवस –	06 अक्टूबर
विश्व खाद्य दिवस –	16 अक्टूबर
राष्ट्रीय शिक्षा दिवस (मौलाना अब्दुल कलाम आजाद का जन्म दिवस) –	11 नवम्बर
विश्व पर्यावरण संरक्षण दिवस –	26 नवम्बर
दक्षेस (सार्क) दिवस –	08 दिसम्बर
अंतर्राष्ट्रीय पर्वतन दिवस –	11 दिसम्बर
राष्ट्रीय ऊर्जा संरक्षण दिवस –	14 दिसम्बर
राष्ट्रीय उपभोक्ता दिवस –	24 दिसम्बर

गौरवपूर्ण आश्चर्य

न्यू सेवन वंडर्स ऑफ द वर्ल्ड

1. ताज महल, आगरा
2. रोमन कोलोजियम (70-82 ई),रोम
3. माचू पिचू (1460-1470), पेरू
4. चीन की दीवार (ईसा पूर्व 220-1644 ई)
5. चिचेन इजा पिरामिड (सन 800 से पहले), मैक्सिको
6. पेट्रा (ईसा पूर्व-9-सन 40), जॉर्डन
7. क्राइस्ट रिडीमर (1931), ब्राजील

प्राचीन विश्व के सात अद्भूत आश्चर्य

1. मिस्र के पिरामिड
2. कोलोसस ऑफ रोड्स
3. बेबीलोन के झूलते बाग
4. हेलिकार्नेसस (मोसलस) स्थित मकबरा
5. अलेक्जेंड्रिया में फेरोस द्वीप स्तंभ
6. ओलंपिया स्थित ज्यूस देवता की मूर्ति
7. एफेनस में डायना (आरतेमिस) का मंदिर

नोट: न्यू सेवन वंडर्स ऑफ द वर्ल्ड के अनुसार मिस्र के पिरामिड को आठवां आश्चर्य के अंतर्गत रखा गया है।

मध्य अमेरिकी व कैरेबियन देश एवं उनकी राजधानी

देश	राजधानी
एंटीगुआ और बारबूडा –	सेंट जोन्स
बहामास –	नासाउ
बारबाडोस –	ब्रिजटाऊन
बेलीज –	बेलमोपान
बरमूडा –	हैमिल्टन
कोस्टारिका –	सैन जोस
क्यूबा –	हवाना
डोमीनिका –	रोसेऊ
डोमीनिकन गणराज्य –	सांटो डोमिंगो
अल सल्वाडोर –	सान सल्वाडोर
ग्रेनेडा –	सेंट जॉर्ज
ग्वाटेमाला –	ग्वाटेमाला सिटी
हैती –	पोर्ट ऑफ प्रिंस
होंडूरास –	तेगुशिगल्पा
जमैका –	किंग्सटन
मैक्सिको –	मैक्सिको सिटी
निकारागुआ –	मानागुआ
पनामा –	पनामा सिटी
सेंट किट्स नेविस –	बासीतरे
सेंट विंसेंट और ग्रेनेडीज –	किंग्सटाऊन
पनामा –	पनामा सिटी
सेंट लूसिया –	कैस्ट्रीज

अधीनस्थ क्षेत्र

नार्वे के अधीनस्थ क्षेत्र

बोबेट द्वीप, पीटर प्रथम द्वीप, क्वीनमाड लैंड

ब्रिटिश अधीनस्थ क्षेत्र

पिटिकेयर्न, ब्रिटिश वर्जिन द्वीप, केमैन द्वीप, मोंटिसेराट, फॉकलैंड द्वीप, सेंट हेलेना, जिब्राल्टर, ब्रिटिश इंडियन ओशन क्षेत्र (चागोस द्वीप समूह, डियागो गार्सिया आदि), टर्क और कैकोज द्वीप समूह, ब्रिटिश अंटार्कटिका क्षेत्र (द. ओर्नकी द्वीप, द. शेटलैंड द्वीप)

न्यूजीलैंड के अधीनस्थ क्षेत्र

कुक आइलैंड, निउ, रॉस डिपेंडेंसी, टोकेलाओ

स्पेन के अधीनस्थ क्षेत्र

कैनारी द्वीप समूह, क्वाटा, मेलिला, बेलारिक द्वीप समूह,

डेनमार्क के अधीनस्थ क्षेत्र

ग्रीनलैंड, फेरो द्वीप समूह

अमेरिकी अधीनस्थ क्षेत्र

अमेरिकन समोआ, प्यूर्टोरिको, वर्जिन द्वीप, ग्वाम, मिडवे आइसलैंडस, वेक आइसलैंड, उत्तर मेरियाना द्वीप समूह

पुर्तगाल के अधीनस्थ क्षेत्र

नीदरलैंड एंटिलीज, अरूबा, अजोरस, मेडेरिया द्वीप समूह

फ्रांस के अधीनस्थ क्षेत्र

गुआडी लोप, फ्रेंच पोलिनेशिया, मारटीनिक, फ्रेंच गुयाना, रियूनियन, मायोटी, न्यू कैलिडोनिया, वॉलिस तथा फुटुना, सेंट पियरे और मिकिलोन

राष्ट्रीय महत्व के संस्थान

वे राष्ट्रीय संस्थान जहां आरक्षण लागू नहीं होगा।

* होमी भाभा नैशनल इंस्टीट्यूट,	मुंबई
* भाभा अटॉमिक रिसर्च सेंटर,	ट्रॉम्बे
* इंदिरा गांधी अटॉमिक रिसर्च सेंटर,	कलपक्कम
* साहा परमाणु भौतिकी संस्थान,	कोलकाता
* राजा रमन्ना सेंटर फॉर एडवांस्ड टेक्नोलॉजी,इंदौर	
* इंस्टीट्यूट फॉर प्लाज्मा रिसर्च,	गांधीनगर
* वेरिएबल एनर्जी साइक्लॉट्रान सेंटर	कोलकाता
* इंस्टीट्यूट ऑफ फिजिक्स,	भुवनेश्वर
* इंस्टीट्यूट ऑफ मैथेमेटिकल साइंस,	चेन्नई
* हरीशचंद्र रिसर्च इंस्टीट्यूट,	इलाहाबाद
* टाटा मेमोरियल सेंटर,	मुंबई
* नैशनल ब्रेन रिसर्च सेंटर,	गुड़गांव
* फिजिकल रिसर्च लैबोरेटरी,	तिरुवनंतपुरम

Meghwal's IAS

* इंडियन इंस्टीट्यूट ऑफ रिमोट सेंसिग, देहरादून
* टाटा इंस्टीट्यूट ऑफ फंडामेंटल रिसर्च, मुंबई
* नेहरू सेंटर फॉर एडवांस्ड साइंटिफिक रिसर्च, बंगलुरु

अन्य महत्वपूर्ण राष्ट्रीय संस्थान

* इंदिरा गांधी राष्ट्रीय मानव संग्रहालय, भोपाल
* कल्पना चावला स्मारक तारामंडल, कपूरथला
* भारतीय वानस्पतिक सर्वेक्षण विभाग, कोलकाता
* भारतीय प्राणी सर्वेक्षण विभाग, कोलकाता
* भारतीय वन सर्वेक्षण विभाग, देहरादून
* इंदिरा गांधी फॉरेस्ट अकादमी, देहरादून
* सेन्ट्रल एरिड जोन रिसर्च इंस्टीट्यूट, जोधपुर
* इंडियन फॉरेस्ट मैनेजमेंट, भोपाल
* राष्ट्रीय पतझड़ वन अनुसंधान केन्द्र, जबलपुर
* वुड साइंस एंड टेक्नोलॉजी सेन्टर, बंगलुरु
* फॉरेस्ट जेनेटिक सेन्टर, कोयंबटूर
* राष्ट्रीय खाद्य प्रौद्योगिकी उद्यमशीलता एवं प्रबंधन संस्थान, कुंडली (सोनीपत), हरियाणा
* टिडडी चेतावनी संगठन, जोधपुर
* केन्द्रीय आलू अनुसंधान संस्थान, कुफरी (शिमला)
* राष्ट्रीय पौध संरक्षण एंव प्रशिक्षण संस्थान, हैदराबाद
* चौधरी चरण सिंह राष्ट्रीय कृषि विपणन संस्थान, जयपुर
* केन्द्रीय चारा बीज उत्पादन फार्म, हैसरघटटा (बंगलुरु)
* केन्द्रीय कपास अनुसंधान संस्थान, नागपुर
* केन्द्रीय मत्स्य पालन और समुद्री इंजीनियरी प्रशिक्षण संस्थान, कोचीन
* केन्द्रीय कृषि अनुसंधान संस्थान, पोर्ट ब्लेयर
* केन्द्रीय प्रदूषण नियंत्रण बोर्ड, नई दिल्ली
* केन्द्रीय चिड़ियाघर प्राधिकरण, नई दिल्ली
* वर्षा वन अनुसंधान संस्थान, जोरहाट (असम)
* वन आनुवांशिकी तथा वृक्ष प्रजनन संस्थान, कोयंबटूर
* भारतीय मानक ब्यूरो, दिल्ली
* राष्ट्रीय परीक्षण गृह, कोलकाता
* नैनो केंद्र, बंगलुरु
* इंडियन इंस्टीट्यूट ऑफ ट्रॉपिकल मीटिरियोलॉजी, पुणे
* जलवायु परिवर्तन संस्थान, पुणे
* राष्ट्रीय हिमालय हिमनद विज्ञान केंद्र, देहरादून
* नैनो साइंस एण्ड टेक्नोलॉजी संस्थान, मोहाली
* भारतीय खगोल भौतिकी संस्थान, बंगलुरु
* इंडियन इंस्टीट्यूट ऑफ जिओमैगनेटिज्म, मुम्बई
* आर्यभट्ट अनुसंधान वेधशाला, नैनीताल
* भारतीय राष्ट्रीय विज्ञान अकादमी, नई दिल्ली
* भारतीय राष्ट्रीय इंजीनियरिंग अकादमी, नई दिल्ली
* इलेक्ट्रॉनिक कॉर्पोरेशन ऑफ इंडिया लिमिटेड, हैदराबाद
* परमाणु खनिज अनुसंधान और अन्वेषण निदेशालय, हैदराबाद
* प्लाज्मा अनुसंधान संस्थान, अहमदाबाद
* भारतीय राष्ट्रीय महासागर और सूचना सेवा केन्द्र, हैदराबाद
* लाल बहादुर शास्त्री तटवर्ती अनुसंधान एंव उच्च अध्ययन संस्थान, मुम्बई
* भारतीय अंतर्देशीय जलमार्ग प्राधिकरण, नोएडा
* हिन्दुस्तान शिपयार्ड लिमिटेड, विशाखापत्तनम
* राष्ट्रीय जलक्रीड़ा संस्थान, गोवा
* केन्द्रीय मृदा तथा पदार्थ अनुसंधान केन्द्र, नई दिल्ली
* राष्ट्रीय जल विज्ञान संस्थान, रुड़की
* राष्ट्रीय केमिकल्स एवं फर्टिलाइजर्स लिमिटेड, ट्रॉम्बे
* हिंदुस्तान एंटीबायोटिक्स लिमिटेड, पिम्परी (पुणे)
* भारतीय खान ब्यूरो, नागपुर
* हिन्दुस्तान जिंक लिमिटेड, उदयपुर
* केन्द्रीय जल तथा विद्युत अनुसंधान केन्द्र, खड्गवासला, (पुणे)
* राष्ट्रीय परियोजना निर्माण निगम लिमिटेड, नई दिल्ली
* भारत का सुनामी चेतावनी केन्द्र, हैदराबाद
* हाई सिक्युरिटी एनिमल डिजीज सेंटर, भोपाल (बर्ड फ्लू से संबंधित मामलों का परीक्षण यहीं होता है।)

भारत की प्रमुख मिनीरत्न कंपनियां

मिनीरत्न श्रेणी-1

* बलमेर लावर और कम्पनी लिमिटेड
* भारत डायनामिक्स लिमिटेड
* भारत अर्थ मूवर्स लिमिटेड
* भारत संचार निगम लिमिटेड
* बोंगाईगांव रिफाइनरी और पेट्रोकेमिकल्स लिमिटेड
* सेंट्रल वेयरहाउसिंग कॉर्पोरेशन
* चेन्नई पेट्रोलियम कॉर्पोरेशन लिमिटेड
* कंटेनर कॉर्पोरेशन ऑफ इंडिया लिमिटेड
* ड्रेजिंग कॉर्पोरेशन ऑफ इंडिया लिमिटेड
* इंजीनियर्स इंडिया लिमिटेड
* गार्डन रिच शिपबिल्डिर्स एण्ड इंजीनियर्स लिमिटेड
* गोवा शिपयार्ड लिमिटेड
* हिन्दुस्तान न्यूजप्रिंट लिमिटेड
* हाउसिंग और अर्बन डेवलपमेंट कॉर्पोरेशन लिमिटेड
* इंडिया टूरिज्म डेवलपमेंट कॉर्पोरेशन लिमिटेड
* आईआरसीटीसी
* कुद्रेमुख लौह अयस्क कंपनी लिमिटेड
* मजगांव डॉक लिमिटेड
* महानदी कोलफील्ड लिमिटेड
* मंगलौर रिफाइनरी एण्ड पेट्रोकेमिकल्स लिमिटेड
* एमएमटीसी लिमिटेड
* एमएसटीसी लिमिटेड
* नेशनल फर्टिलाइजर्स लिमिटेड
* नेवेली लिग्नाइट कॉर्पोरेशन

मिनीरत्न श्रेणी-2

* एजुकेशनल कंसलटेंट्स (आई) लिमिटेड
* इंजीनियरिंग प्रोजेक्ट (आई) लिमिटेड
* फेरो स्कार्प निगम लिमिटेड
* एचएमटी (इंटरनेशनल) लिमिटेड
* एचएससीसी (इंडिया) लिमिटेड
* इंडिया ट्रेड प्रोमोशन ऑर्गेनाइजेशन लिमिटेड
* इंडियन मेडीसीन्स फारमेक्यूटिकल्स कॉर्पोरेशन लिमिटेड
* मैगजीन ओरे इंडिया लिमिटेड
* मेकॉन लिमिटेड

Meghwal's IAS

* नेशनल फिल्म डेवलपमेंट कॉर्पोरेशन लिमिटेड
* पीईसी लिमिटेड
* राजस्थान इलेक्ट्रॉनिक्स और इंस्ट्रूमेंट्स लिमिटेड
* वाटर और पॉवर कंसल्टेंसी (इंडिया) लिमिटेड

परियोजनाएं जो होंगी राष्ट्रीय संपत्ति

सिंचाई और बिजली उत्पादन क्षमता बढ़ाने के उद्देश्य से केन्द्र ने 14 नदी परियोजनाओं को राष्ट्रीय सम्पति घोषित करने का फैसला किया है1 इनके लिए केन्द्र सरकार 90% राशि देगी लेकिन नदियों का राष्ट्रीयकरण नहीं होगा। इन 14 परियोजनाओं में से तीस्ता बैराज, शाहपुर कांदी, दूसरी रावी-ब्यास लिंक, उझ और जिप्सा परियाजनाओं का अंतराष्ट्रीय व सामरिक महत्व है।

ये परियोजनाएं होंगी राष्ट्रीय संपत्ति

1. तीस्ता बैराज (पश्चिम बंगाल)
2. शाहपुर कांदी (पंजाब), रावी पर
3. दूसरी रावी-व्यास लिंक (पंजाब)
4. उझ बहुउद्देशीय परियोजना (जम्मू-कश्मीर), चेनाब पर
5. बुरसर (जम्मू-कश्मीर), चेनाब पर
6. जिप्सा परियोजना (हिमाचल प्रदेश), चेनाब पर
7. रेणुका (हिमाचल प्रदेश) गिरि पर
8. लखवर व्यासी (उत्तराखंड), यमुना पर
9. किशाउ (हिमाचल प्रदेश-उत्तराखंड), टोंस पर
10. नोआ देहांग बांध परियोजना (अरुणाचल प्रदेश),
11. अपर सियांग (अरुणाचल प्रदेश), ब्रह्मपुत्र पर
12. कुल्सी बांध परियोजना (असम), सियांग पर
13. गोसीखुर्द (महाराष्ट्र), वेनगंगा पर
14. केन-बेतवा (मध्यप्रदेश)

11वीं योजना मे निर्माणाधीन पनबिजली परियोजनाएं

1. पार्वती -	हिमांचल
2. तीस्ता स्टेज -	सिक्किम
3. सेबा -	जम्मू-कश्मीर
4. सुबनसिरी लोअर -	असम
5. उडी -	जम्मू-कश्मीर
6. चमेरा -	हिमाचल प्रदेश
7. तीस्ता लो डेम -	पश्चिमबंगाल
8. ओंकारेश्वर -	मध्य प्रदेश
9. दुल्हस्ती -	जम्मू-कश्मीर
10. निम्मो-बैजो -	जम्मू-कश्मीर
11. किशनगंगा -	जम्मू-कश्मीर
12. पकल कुल -	जम्मू-कश्मीर
13. धौलीगंगा -	उत्तराखंड
14. कोटली भेल -	उत्तराखंड
15. बाव-प्प -	महाराष्ट्र
16. पुरुलिया पीएसएस -	पश्चिम बंगाल
17. इंदिरा सागर -	मध्य प्रदेश
18. दिबांग -	अरुणाचल प्रदेश
19. रंजीत -	सिक्किम
20. तिपाईमुख बांध - मणिपुर	

भारत के 10 सर्वाधिक साक्षर जिले

1. आइजॉल	मिजोरम
2. सरचिप	मिजोरम
3. कोट्टायम	केरल
4. माहे	पांडिचेरी
5. पथनामथिट्टा	केरल
6. अलपुझा	केरल
7. एर्नाकुलम	केरल
8. कन्नूर	केरल
9. थ्रिसूर	केरल
10. कोझिकोडे	केरल

लिंगानुपात

भारत के 5 सर्वाधिक लिंगानुपात वाले जिले

जिला	राज्य/केंद्रशासित प्रदेश	लिंगानुपात
माहे	पुदुचेरी	1,148
अलमोढ़ा	उत्तराखंड	1,147
रत्नगिरि	महाराष्ट्र	1,135
उडुपी	कर्नाटक	1,127
रूद्रप्रयाग	उत्तराखंड	1,117

भारत के 5 निम्नतम लिंगानुपात वाले जिले

दमन	दमन व दीव	591
पश्चिमी कामेंग	अरुणाचल प्रदेश	749
नॉथ	सिक्किम	752
चंडीगढ़	चंडीगढ़	773
मुम्बई	महाराष्ट्र	774

भारत में नगरीय जनसंख्या

राज्य	नगरीय जनसंख्या प्रतिशत
1. गोआ	49.77
2. मिजोरम	49.50
3. तमिलनाडु	43.86
4. महाराष्ट्र	42.40
5. गुजरात	37.35
6. कर्नाटक	33.98
7. पंजाब	33.95
8. हरियाणा	29.00

केंद्रशासित राज्य	नगरीय जनसंख्या प्रतिशत
1. दिल्ली	93.01
2. छत्तीसगढ़	89.01
3. पांडिचेरी	66.57
4. लक्षद्वीप	44.47
5. दमन और दीव	36.25
6. अंडमान और निकोबार	32.87
7. दादर और नागर हवेली	22.89

अंतरिक्ष विभाग के अंतर्गत कार्यरत विभिन्न अंतरिक्ष केन्द्र निम्नवत हैं-

श्री हरिकोटा:	सतीश धवन स्पेस सेंटर, इस केन्द्र से प्रक्षेपण यान एवं साउंडिंग रॉकेटों का प्रक्षेपण किया जाता है।
हासन:	इनसेट मास्टर कंट्रोल फैसीलिटी, यह केन्द्र इनसेट उपग्रहों के प्रचालन के लिए उत्तरदायी है।
तिरुवनंतपुरम :	विक्रम साराभाई स्पेस सेंटर, यह केन्द्र देश की प्रक्षेपण यान प्रौद्योगिकी के क्षेत्र मे कार्यरत है।
थुम्बा:	इसरो इनर्शियल सिस्टम यूनिट।
महेन्द्रगिरि :	लिक्विड प्रोपल्शन टेस्ट फैसिलिटी।
बंगलुरु :	अंतरिक्ष आयोग, अंतरिक्ष विभाग, इसरो मुख्यालय,

Meghwal's IAS

इनसेट प्रोग्राम्स आफिस, रीजनल रिमोट सेंसिग सर्विस सेंटर, इसरो सैटेलाइट सेंटर, इसरो टेलीमेटरी ट्रेकिंग एंड कमांड नेटवर्क।

अहमदाबाद : स्पेस एपलिकेशन सेंटर, फिजिकल रिसर्च लैबोरेटरी डेवलपमेंट एंड एजुकेशनल कम्युनिकेशन यूनिट, यहां अंतरिक्ष उपयोग हेतु अनुसंधान एवं विकास कार्य होता है।

विभिन्न नदियों पर महत्त्वपूर्ण पत्तन

राइन –	रॉटरडम
वेजर –	ब्रिमेन, हनोबर
एल्ब –	हैम्बर्ग, ब्रंसविक तथा ड्रेसडेन
ओडर –	स्टेटीन, फ्रैंकफुर्ट
सीन –	मार्सेलीज
गेरून –	बोर्डो
लॉयर –	सेंट नजारे तथा नांटे
मिसीसिपी –	न्यूऑर्लियंस
अमेजन –	मनाओस, इक्वीटास
पराना –	सांटाफे
सीक्यांग –	कैंटन, हांगकांग
मर्रे-डार्लिंग –	बोकी

प्रजाति निर्धारण के शारीरिक लक्षण

त्वचा का रंग प्रजाति	
1. श्वेत त्वचा या गौर वर्ण (Leucodermi)	कॉकेशियन प्रजाति
2. पीली त्वचा या पीत वर्ण (Xanthodermi)	मंगोलियन प्रजाति
3. श्याम त्वचा या काला वर्ण (Melanodermi)	नीग्रोयड प्रजाति
बालों के प्रकार प्रजाति	
1. सीधे बाल (Leiotrichy or Lissotrichy)	मंगोलायड प्रजाति
2. घुंघराले बाल (Cymotrichy)	काकेशायड प्रजाति
3. ऊन जैसे बाल (Woltrichy)	नीग्रोयड प्रजाति

विश्व में मुख्यत: तीन वृहद् प्रजातीय समूह पाए जाते हैं जो निम्नलिखित है-

1. श्वेत प्रजाति अथवा काकेशायड
2. पीत प्रजाति अथवा मंगोलायड
3. काली प्रजाति अथवा नीग्रोयड

1. काकेशायड प्रजाति – ये गौरवर्ण के होते हैं एवं विश्व में सबसे अधिक विस्तृत क्षेत्रों में पायी जानेवाली प्रजाति जाती है। ये प्राय: सभी महाद्वीपों में पाए जाते हैं एवं विश्व की लगभग आधी जनसंख्या इसी प्रजाति के अंतर्गत शामिल की जा सकती है। इसका मूल स्थान काकेशस पर्वत के द. भाग हैं। इस प्रजाति की तीन शाखाएँ हैं-

(1) यूरोपियन (2) इंडो-इरानियन (3) सेमाइट और हेमाइट।

(1) यूरोपियन शाखा – इसे पुन: तीन उपवर्गों में बांटा जाता है- (i) नार्डिक (ii) भूमध्यसागरीय (iii) अल्पाइन

काकेशियन प्रजाति की यह शाखा विश्व के उन सभी क्षेत्रों में पायी जाती है जहाँ यूरोपीय उपनिवेश स्थापित हुए हैं। यद्यपि इनका सर्वाधिक केन्द्रीकरण यूरोप में है।

(2) इंडो-इरानियन शाखा – यह इराक, ईरान व पाकिस्तान क्षेत्र में मिलती है। भारत के पश्चिमोत्तर एवं मध्य भाग में भी यह प्रजाति मिलती है।

(3) सेमाइट और हेमाइट – यह प्रजाति उत्तरी और उत्तर पूर्वी अफ्रीका में फैली हुई है। इनके अंतर्गत मोरक्को, अलजीरिया, ट्यूनीशिया, लीबिया, मिस्र, इथियोपिया, सोमालिया, सऊदी अरब, यमन, जार्डन आदि क्षेत्र की जनसंख्या शामिल की जाती है।

2. मंगोलायड प्रजाति – पीले-भूरे रंग के मंगोल प्रजाति का मुख्य विस्तार मध्य व पूर्वी एशिया में है। दक्षिण पूर्वी एशिया व इंडोनेशिया में आस्ट्रेलॉयड लोगों से संपर्क के कारण इनका रंग हल्का भूरा हो गया है। मंगोल प्रजाति का विशिष्ट लक्षण उनकी तिरछी आँखें है जो भारी पलकों के कारण मुड़ी हुई दिखती है। इनके बाल काले, खड़े एवं अल्प होते हैं। ये लघु कापालिक होते हैं एवं इनकी औसत ऊँचाई 1.66 मीटर है। इनके चार प्रमुख वर्ग हैं-

i) प्राचीन मंगोलायड – ये उत्तरी व मध्य चीन, मंगोलिया तथा तिब्बत में पाये जाते हैं। उपरोक्त वर्णित लक्षण इन्हीं से संबंधित हैं। कालमुख एवं कोरयाक कबीले इस वर्ग के प्रतिनिधि हैं।

ii) आर्कटिक मंगोलाइड – ये कनाडा, ग्रीनलैंड, अलास्का, तथा साइबेरिया के उपध्रुवीय भाग में रहते हैं। एस्किमो एवं उसी से संबंधित सेमोयेड्स व युकागीर जैसी अन्य जनजातियाँ इस वर्ग के अन्तर्गत आती है। इनका कद कुछ छोटा (1.62 मी.) होता है। परंतु प्राचीन मंगोलायड की तुलना में इनका सिर कुछ बड़ा (78.6 से 84.6) होता है। ये कुछ ताम्रवर्णी होते हैं।

iii) अमेरिकन इंडियन -उत्तरी व दक्षिणी अमेरिका के रेड इंडियन में मंगोलों के शारीरिक लक्षण मिलते हैं। इनमें काकेशियन व नीग्रो का बड़े पैमाने पर मिश्रण हुआ है। इसीलिए इनकी आंखें तिरछी नहीं होती। इनके नेत्र का रंग भूरा होता है। ये मैक्सिको से आमेजन के उत्तरी व मध्य घाटी तक फैले हुए हैं।

iv) इंडोनेशियन मलय – इनमें मंगोलों के साथ-साथ काकेशियन व आस्ट्रेलायड तत्वों का सम्मिश्रण मिलता है। यह प्रजाति द. चीन, वियतनाम, लाओस, कंबोडिया, थाइलैंड, म्यांमार, मलाया तथा इंडोनेशिया में पायी जाती है। इनका कद अपेक्षाकृत छोटा (1.55-1.58 मी.) एवं सिर कुछ लंबा होता है।

3. नीग्रोयड प्रजाति – ये काले भूरे तथा कत्थई रंग के होते हैं। इनका मूल स्थान अफ्रीका महाद्वीप है। इन्हें दो शाखाओं में बांटा जा सकता है (i) अफ्रीकन (ii) एशियाई शाखा।

i) अफ्रीकन शाखा – ये सहारा मरुस्थल के द. भागों में मिलते हैं। इनके कई उपवर्ग हैं। वास्तविक नीग्रो पअफ्रीका में सेनेगल नदी के मुहाने में नाइजीरिया के पूर्वी मुहाने तक फैले हुए हैं। नाइजीरिया, घाना, आइवरी कोस्ट, लाइबेरिया आदि देशों में वास्तविक नीग्रो पाये जाते हैं। इनका औसत कद 1.73 मीटर तथा कापालिक परिमिति 73 से 75 तक होता है। मध्य अफ्रीका में वनवासी नीग्रो तथा पूर्वी अफ्रीका में अर्द्ध हेमेटी प्रजातियाँ पायी जाती है। केन्या, युगांडा, तंजानिया में पायी जाने वाली मसाई, बइसो आदि कबीले अर्द्ध हेमेटी प्रकार के हैं। कालाहारी मरुस्थल में बुशमेन व हॉटेन्टाट रहते हैं। इनमें मंगोल तत्वों का मिश्रण हुआ है। पिग्मी नीग्रो अफ्रीका के कांगो क्षेत्र में मिलते हैं। इनका कद ठिगना (1.36 मी.) है किन्तु ये मध्य कापालिक है। मध्य व द. अफ्रीका में बंतू भाषी नीग्रो भी पाये जाते हैं।

ii) एशियाई शाखा – नीग्रो प्रजाति के अंतर्गत आनेवाली इस शाखा में द्रविड़ व आस्ट्रेलायड प्रजातियाँ आती है। दक्षिण भारत में द्रविड़ प्रजाति तथा द. पू. एशिया व उत्तरी आस्ट्रेलिया में आस्ट्रेलायड प्रजातियाँ पायी जाती है। पूर्वी भारत के गोंड तथा उराँव द्रविड़ प्रजाति के हैं जबकि द. भारत में टोडा, कादर, कुरूंबा आदि जनजातियाँ आस्ट्रेलायड प्रजाति के हैं।

मलेशिया के सेमांग व सकाई, पूर्वी सुमात्रा तथा फिलीपींस के पिग्मी, ऐवा, अंडमान के ओन्गे, न्यूगिनी के पापुआन तथा आस्ट्रेलिया के मूल निवासी आस्ट्रेलायड वर्ग के हैं। आस्ट्रेलिया के मूल निवासी दीर्घ कापालिक होते हैं एवं उनकी औसत ऊँचाई 1.56 मीटर होती है। नीग्रो प्रजाति की अमेरिकन शाखा प. अफ्रीका के नीग्रो लोगों के स्थानांतरण से बनी है। ये कैरेबियन तथा द. पूर्वी. सं.रा. अमेरिका में गन्ना तथा कपास की खेती करने के लिए गुलाम के रूप में लाए गए थे। अत: इनमें वास्तविक नीग्रो के लक्षण मिलते हैं।

विश्व की जनजातियाँ

1. पिग्मी – ये कांगो बेसिन के गैबोन, युगांडा, द.पू. एशिया के फिलीपींस के वन क्षेत्रों, अमेटा तथा न्यूगिनी के वनों में पाए जाते हैं। ये काले-नाटे कद के नीग्रिटो प्रजाति के लोग है। इनका कद सामान्यत: 1 से 1.5 मीटर तक होता है जो विश्व के सभी मानवों में सबसे कम है। ये आखेट करने में कुशल होते है एवं यही उनकी अर्थव्यवस्था का आधार है। ये केला बहुत पसंद करते हैं।

2. बोरों – पश्चिम आमेजन बेसिन, ब्राजील, पेरू व कोलंबिया के सीमांत क्षेत्रों में रहने वाली यह जनजाति आदिम कृषक के रूप में जीवन-यापन करती है। शारीरिक गठन की दृष्टि से बोरों अमेरिका के रेड इंडियन के समान है। इनकी त्वचा का रंग भूरा, बाल सीधे और कद मध्यम होता है। ये लड़ाकू व निर्दय व्यवहार के होते हैं। इनके उत्सवों में मानव हत्या व मांस भक्षण अधिक प्रचलित है। विजय चिह्न के रूप में वे मानव खोपड़ियों को अपनी झोपड़ियों में लगाते हैं।

3. सकाई – मलाया प्रायद्वीप व मलेशिया के वनों में निवास करने वाली यह आदिम जाति साफ रंग, लंबे कद और छरहरे शरीर के होते हैं। इनका सिर लंबा तथा पतला एवं बाल काले व घुंघराले होते हैं। ये प्राय: निर्दयी होते हैं। प्राचीन आदिम प्रकार की कृषि, बागानी कृषि एवं आखेट इनका प्रमुख व्यवसाय है।

4. सेमांग – ये मलाया के पर्वतीय भागों, अंडमान, फिलीपींस और मध्य अफ्रीका में रहते हैं। ये नीग्रिटो प्रजाति के हैं। इनका कद नाटा, रंग गहरा भूरा, नाक छोटी व चौड़ी, होठ चपटे व मोटे तथा बाल घुंघराले व काले होते हैं। इनका जीवन वनों की उपज तथा आखेट पर निर्भर करता है।

5. पापुआन – प्रशांत महासागर में स्थित पापुआ न्यूगिनी द्वीप के ये आदिवासी पिग्मी जाति से मिलते-जुलते हैं। इनका कद नाटा, त्वचा का रंग गहरा कत्थई एवं डील-डौल बेतुका होता है। पापुआन की अर्थव्यवस्था का मुख्य आधार कृषि है। ये गन्ना और पपीता की खेती करते हैं। कुछ पापुआन पशुपालन भी करते हैं। पापुआन खूंखार प्रवृत्ति के एवं अंधविश्वासी लोग हैं।

6. बुशमैन – द. अफ्रीका के कालाहारी मरुस्थल में निवास करने वाली यह जन-जाति अब लेसोथो, नैटाल और जिंबाब्वे में पाई जाती है। ये हब्शी प्रजाति के लोग हैं। इनकी आँखें चौड़ी व त्वचा काली होती है। बुशमैन का मुख्य व्यवसाय आखेट व जंगली वनस्पति संग्रह करना है। ये लोग सर्वभक्षी होते हैं।

7. बद्दू – अरब के उत्तरी भाग के हमद और नेफद मरुस्थल में कबीले के रूप में चलवासी जीवन व्यतीत करने वाली बद्दू (बेदुयिन्स) जनजाति नीग्रिटो प्रजाति से संबंधित हैं। ये ऊँट, भेड़, बकरी व घोड़े को पालने का काम करते हैं। ऊँट पालने वाले बद्दू को रूवाला कहा जाता है। जलाशयों के निकट ये कृषि व्यवसाय भी करते हैं। ये लोग तंबुओं में निवास करते हैं।

8. मसाई – टांगानिका, केन्या व पूर्वी युगांडा के पठारी क्षेत्रों में ये घुमक्कड़ी पशुचारक के रूप में जीवन निर्वाह करते हैं। इनमें मेडिटेरियन और नीग्रोइड प्रजाति के मिश्रण की झलक दृष्टिगत होती है। ये लोग झोपड़ियों में रहते हैं जिन्हें 'क्रॉल' कहा जाता है। ये गाय को पवित्र मानते हैं। यहां के पुजारी लैबोन कहलाते हैं।

9. खिरगीज – ये मध्य एशिया में किर्गिजिस्तान में पामीर पठार एवं थ्यान-शान पर्वतमाला में निवास करते हैं। ये मंगोल प्रजाति के होते हैं। इनकी त्वचा का रंग पीला, बाल काले, कद छोटा, शरीर सुगठित एवं आँखें छोटी व तिरछी होती है। खिरगीज ऋतु-प्रवास करनेवाले पशुचारक चलवासी है। इनके निवास गृह गोलाकार तंबुओं में होते हैं जिसे 'युट्र' कहा जाता है।

10. एस्किमो – अमेरिका के अलास्का से ग्रीनलैंड तक के टुंड्रा प्रदेशीय क्षेत्रों में रहने वाले एस्किमो मंगोलॉयड प्रजाति के हैं। इनका मुख्य व्यवसाय आखेट है। रेंडियर इनका पालतू पशु है। ये वालरस, श्वेत भालू, रेंडियर, सील मछली आदि का शिकार करते हैं। हारपून नामक अस्त्र व उमियाक नाव की मदद से ये ह्वेल तक का शिकार कर लेते है। इनका निवास गृह 'इग्लू' बर्फ के टुकड़ों से बना होता है।

11. सेमोयेड्स – पश्चिमी साइबेरिया के टुंड्रा प्रदेश के निवासी जो कि मंगोलॉयड प्रजाति के हैं। इनका मुख्य व्यवसाय आखेट व पशुपालन है। ये चलवासी आखेटक है। अत: इनका स्थायी निवास गृह नहीं होता।

12. युकागीर – उ.पू. साइबेरिया के बर्खोयांस्क और स्टैनोवाय पर्वत के मध्य रहने वाले युकागीर मंगोलॉयड प्रजाति के हैं। शिकार व मत्स्यपालन इनकी अर्थव्यवस्था का आधार है।

13. पुनन – यह मध्य बोर्नियो में रहने वाली जनजाति है जो कृषि व वनों से संग्रहित खाद्य पर निर्भर है।

14. कज्जाक – कजाकिस्तान व सीक्यांग (चीन) में खिरगीज जनजाति की तरह ये भी पशुचारक चलवासी है।

15. माया – मध्य अमेरिका के आदिवासी इंडियन जो कि मैक्सिको, ग्वाटेमाला और होंडुरास में निवास करते हैं एवं मूलत: कृषक है।

16. माओरी – ये न्यूजीलैंड के पोलीनेशियन आदिवासी हैं। इनका प्रमुख व्यवसाय कृषि, आखेट व वनोत्पाद का संग्रह है।

17. मगयार – इन्हें 'हंग्रेरियन' कहते हैं क्योंकि ये हंग्रेरी भाषा बोलते हैं। ये रूमानिया, यूगोस्लाविया, चेकोस्लोवाकिया और यूक्रेन में रहते हैं एवं मूलत: कृषक हैं।

18. बोअर – ये द. अफ्रीका के औरेंज फ्री स्टेट में रहते हैं। ये पशुपालक व कृषक हैं।

19. जुलु – ये दक्षिण अफ्रीका के नैटाल क्षेत्र के निवासी हैं जो 'न्गुनी' भाषा बोलते हैं। ये मूलत: खाद्यान्न उत्पादक, कृषक व पशुपालक है।

20. कोसेक्स – काला सागर और कैस्पियन सागर के निकटवर्ती उत्तरी भागों में निवास करते हैं। ये पोलैंड, लिथुआनिया, मस्कोवा व रूस में मिलते है। ये खूंखार, लड़ाकू व वीर हैं। कृषि इनका प्रमुख व्यवसाय है।

21. अफरीदी – पाकिस्तान में सफेद कोह से पेशावर तक रहनेवाली पख्तूनी आदिवासी जाति जो कुशल योद्धा व वीर है।

विश्व की विलुप्त प्राय: प्रजातियाँ

1. हाज्दा – तंजानिया में रहनेवाली इस जनजाति में व्यक्तियों की संख्या मात्र 200 है। ये बुशमैन के समान बोली बोलते हैं।

2. कुन्ग – यह कालाहारी क्षेत्र में रहनेवाली जनजाति है। आनुवांशिक साक्ष्यों से इस बात की पुष्टि होती है कि ये अफ्रीका के विशाल क्षेत्र में विस्तृत थे। वर्तमान में इनकी संख्या 1500 है।

3. अपाचे – सं.रा.अमेरिका के ओक्लाहामा के मैदान में रहनेवाली इस जनजाति में व्यक्तियों की संख्या 1000 है। ये साइबेरिया से प्रवासित होकर यहाँ आए थे।

4. यनोमनी – ये वेनेजुएला व ब्राजील की सीमा पर मिलनेवाली विलुप्तप्राय: जनजाति है।

5. युकागीर – साइबेरिया क्षेत्र की इस जनजाति में व्यक्तियों की संख्या मात्र

2000 है। ये रेंडियर का शिकार करने वाले शिकारी लोग है।

6. चुक्ची – पाल्को एशियाई भाषा बोलनेवाली इस जनजाति के लोग उ.पू. साइबेरिया व उत्तरी अमेरिका में निवास करते हैं।

7. ओन्गे – अंडमान द्वीप में नीग्रिटो प्रजाति की यह जनजाति 100 से भी कम संख्या में निवास करती है। द्रुतगति से विलुप्त होती जा रही यह जनजाति हजारों वर्ष पूर्व यहाँ अफ्रीका से प्रवासित होकर आई थी।

8. सेंटीनली – ये भी अंडमान-निकोबार की विलुप्त होती जा रही जनजाति है।

पर्वतीय क्षेत्रों में निवास करनेवाली जनजातियाँ

क्षेत्र	जनजातियाँ
1. छोटानागपुर क्षेत्र (भारत)	कोल, संथाल, हो, भील
2. नीलगिरि पहाड़ियाँ (द. भारत)	टोडा
3. श्रीलंका	वेद्दा
4. फिलीपीन्स	एटाज
5. मलेशिया	सेमांग
6. वेल्स तथा कार्नवाल (वेल्स क्षेत्र, यूरोप)	वेल्स जनजाति
7. स्कॉटलैंड	हाइलैंडर
8. फ्रांस	ब्रिटेन
9. चेक एवं स्लोवाक गणराज्य	स्लोवाक जनजाति
10. ओजार्क तथा एप्लेशियन क्षेत्र (सं.रा. अमेरिका)	हिल बिली
11. जार्जिया (सं.रा. अमेरिका)	क्रैकर
12. द. कैरोलाइना (सं.रा. अमेरिका)	सैंडहिलर

भारत के प्रमुख जलप्रपात

जलप्रपात	ऊंचाई (मी.)	नदी	स्थान
जोग/गरसोप्पा/महात्मा गांधी	225	शरावती नदी	कर्नाटक
येना	183	येना नदी	महाबलेश्वर
शिवसमुद्रम्	90	कावेरी नदी	कर्नाटक
गौतमधारा/जोन्हा	85	रारू नदी	झारखंड
हुंडरू	74	स्वर्णरेखा नदी	झारखंड
साडनी	61	शंख नदी	झारखंड
गोकक	55	गोकक नदी	कर्नाटक
दसम	40	कांची नदी	झारखंड
पाइकारा	–	पाइकारा नदी	नीलगिरि
ककोलत	24	ककोलत नदी	झारखंड
चुलिया	18	चम्बल नदी	राजस्थान
पुनासा	10	नर्मदा नदी	जबलपुर
धुंआधार	–	नर्मदा नदी	जबलपुर

भारत की प्रमुख झीलें

– वुलर (जम्मू-कश्मीर) झेलम नदी पर बना गोखुर झील है। इस पर विवर्तनिक क्रिया का भी प्रभाव है। यह भारत में मीठे पानी की सबसे बड़ी झील है। तुलबुल परियोजना इसी पर स्थित है। डल झील कश्मीर की अत्यधिक खूबसूरत झील है।

– सांभर, लूनकरसर, पंचभद्रा एवं डीडवाना राजस्थान की लवणीय झीलें है। इनसे नमक का उत्पादन भी किया जाता है। उदयसागर, पिछौला, जयसमंद एवं राजसमंद राजस्थान की अन्य महत्वपूर्ण झीलें हैं।

– उकाई (गुजरात) ताप्ती नदी पर स्थित मानव निर्मित झील है।

– राणाप्रताप सागर व जवाहर सागर (राजस्थान) एवं गांधी सागर (मध्य प्रदेश) चंबल नदी पर स्थित झीलें है।

– गोविंद सागर हिमाचल में भाखड़ा बांध के पीछे निर्मित विशाल झील है।

– नागार्जुन सागर (आंध्रप्रदेश) कृष्णा नदी पर, निजामसागर (आंध्रप्रदेश) मंजरा नदी पर एवं तुंगभद्रा (कर्नाटक) तुंगभद्रा नदी पर मानव निर्मित झील है।

– गोविन्द बल्लभ पंत सागर (छत्तीसगढ़ व उत्तर प्रदेश) सोन की सहायक नदी रिहन्द पर बनाई गई झील है।

– स्टेनले जलाशय तमिलनाडु में कावेरी नदी पर मेट्टूर बांध के पीछे बनी झील है।

– लोकटक झील (मणिपुर)– यह पूर्वोत्तर भारत में मीठे पानी की सबसे बड़ी झील है। इस झील में केबुललामजाओ नाम का तैरता हुआ राष्ट्रीय पार्क है।

– चिल्का झील (उड़ीसा) भारत की सबसे बड़ी लैगून (खारे पानी की) झील है।

– कोल्लेरू झील आन्ध्र प्रदेश के डेल्टाई प्रदेश में बनी बड़ी झील है।

– पुलीकट झील (आन्ध्र प्रदेश) एक लैगून झील है। श्री हरिकोटा द्वीप यहीं पर है जहां सतीश धवन उपग्रह प्रक्षेपण केन्द्र है।

– हुसैन सागर झील हैदराबाद व सिकंदराबाद के मध्य स्थित है एवं इन दोनों नगरों के बीच यातायात संबंध स्थापित करता है।

– बेम्बानद झील केरल में स्थित है। इसी झील में वेलिंगटन द्वीप है जहाँ पर राष्ट्रीय नौकायन प्रतियोगिताएँ होती हैं। भारत का सबसे छोटा राष्ट्रीय राजमार्ग NH-47A वेलिंगटन द्वीप पर ही है। अष्टमुदी केरल की एक अन्य महत्वपूर्ण लैगून झील है।

– लोनार झील महाराष्ट्र के बुलढाना जिले में एक क्रेटर झील है जो उल्कापिंड के गिरने से बनी है।

कुछ खास जीवों से संबंधित अभ्यारण्य :

कच्छ का छोटा रन (गुजरात) – जंगली गधा

काजीरंगा (असम) –	एक सींग वाला गैंडा
जलदापाड़ा (असम) –	एक सींग वाला गैंडा
दाचीगाम (जम्मू-कश्मीर) –	सफेद भालू
गिर (गुजरात) –	एशियायी सिंह
वनविहार नेशनल पार्क(मध्यप्रदेश) –	सफेद बाघ
रेगिस्तान राष्ट्रीय पार्क (राजस्थान) –	ऊँट
क्योलाडियो नेशनल पार्क – (राजस्थान)	साइबेरियन क्रेन

पक्षियों के आश्रय स्थल :

केवलादेव घाना (भरतपुर) –	राजस्थान
वेदाथांगल –	तमिलनाडु
रंगनाथिटु –	कर्नाटक
सलीम अली –	तमिलनाडु

कुछ अन्य महत्त्वपूर्ण राष्ट्रीय पार्क व अभ्यारण्य :

केबुललामजाओ राष्ट्रीय पार्क –	मणिपुर
लाओखोवा वन्य जीव अभ्यारण्य –	असम
ग्रेट इंडियन बस्टर्ड अभ्यारण्य –	महाराष्ट्र
सबरीमाला नेशनल पार्क –	केरल
साइलेन्ट वैली नेशनल पार्क –	केरल
घाटप्रभा अभ्यारण्य –	कर्नाटक

हेमिस हाई अल्टीट्यूड नेशनल पार्क–	कश्मीर
मेरीन नेशनल पार्क –	अंडमान निकोबार
सैडल पीक नेशनल पार्क –	अंडमान
रॉस आइलैंड राष्ट्रीय उद्यान –	रॉस द्वीप (अंडमान निकोबार)
कोल्लेरू एक्वेयरी –	आंध्र प्रदेश

गौतम बुद्ध वन्य जीव अभ्यारण्य –गया (बिहार)

पारिस्थितिकी से संबंधित अनेक अनुसंधान केन्द्र भी स्थापित किए गए हैं। इनमें निम्न प्रमुख हैं :-

1. इंदिरा गांधी फॉरेस्ट अकादमी, देहरादून।
2. सेन्ट्रल एरिड जोन रिसर्च इंस्टीट्यूट, जोधपुर।
3. इंडियन फॉरेस्ट मैनेजमेंट, भोपाल।
4. राष्ट्रीय पतझड़ वन अनुसंधान केन्द्र, जबलपुर।
5. वुड साइंस एंड टेक्नोलॉजी सेन्टर, बंगलौर।
6. फॉरेस्ट जेनेटिक सेन्टर, कोयंबटूर।
7. सलीम अली पक्षी विज्ञान (आर्निथोलॉजी) व प्राकृतिक विज्ञान केंद्र, कोयंबटूर।

आर्द्र या दलदली भूमि

1971 ई. में जलग्रस्त भूमि के संरक्षण के लिए बहु-उद्देशीय समझौता हुआ था जिसे रामसर सम्मेलन (ईरान) के नाम से जाना जाता है। भारत इसमें 1982 ई. में शामिल हुआ एवं पर्यावरण व वन मंत्रालय द्वारा इनके संरक्षण हेतु 1987 ई. से राष्ट्रीय आर्द्र या दलदली भूमि संरक्षण कार्यक्रम चलाया जा रहा है। इस कार्यक्रम के अंतर्गत 24 राज्यों में कुल 103 आर्द्रभूमियों को संरक्षण के लिए चुना गया है तथा 36 जलग्रस्त भूमियों की प्रबंध वाली योजनाएं अनुमोदित हो गई है। इसमें कोल्लेरू (आन्ध्रप्रदेश), वुलर (जम्मू-कश्मीर), चिल्का (उड़ीसा), लोकटक (मणिपुर), भोज (मध्यप्रदेश), सांभर व पिछोला (राजस्थान), अष्टमुदी (केरल), हरिके व कांजली (पंजाब), उजनी (महाराष्ट्र), रेणुका (हिमाचल), काबर (बिहार), नल सरोवर (गुजरात), सुखना (चंडीगढ़) प्रमुख हैं।

मैंग्रोव वनस्पतियां

मैंग्रोव वनस्पतियां विश्व का लगभग 5% है और ये तटीय राज्यों व केन्द्रशासित प्रदेशों में लगभग 4,500 वर्ग किमी. क्षेत्र में फैली हुई हैं, जिनका लगभग आधा भाग पश्चिम बंगाल के सुंदरवन में है। राष्ट्रीय पर्यावरण नीति 2006 कच्छ (मैंग्रोव) वनस्पतियों और प्रवाल भित्तियों को महत्वपूर्ण तटीय पर्यावरण संसाधन मानता है जिनसे समुद्री जीव प्रजातियों को आश्रय मिलता है, उन्हें, तीव्र मौसमी बदलाव से सुरक्षा मिलती है। इसके साथ ही ये सतत् पर्यटन के लिए संसाधन का आधार है। भारतीय वन सर्वे पूरे देश में कच्छ वनस्पति क्षेत्र का मूल्यांकन कर रहा है। पर्यावरण मंत्रालय 1987 ई. से इसके संरक्षण हेतु कार्यक्रम चला
रहा है। मंत्रालय ने उड़ीसा में 'राष्ट्रीय कच्छ वनस्पति आनुवांशिक संसाधन केन्द्र' स्थापित किया है। भारत में विश्व की कुछ सर्वश्रेष्ठ कच्छ वनस्पतियां हैं। मैंग्रोव वनस्पति संरक्षण और प्रबंधन योजना में 38 मैंग्रोव वनस्पति क्षेत्रों की पहचान की गई है। उत्तरी अंडमान और निकोबार द्वीप समूह, सुन्दरवन (पबंगाल), भीतर-कणिका, धमरा (उड़ीसा), कोरिंगा, गोदावरी डेल्टा, कृष्णा का मुहाना (आंध्रप्रदेश) महानदी डेल्टा (उड़ीसा),
पिछावरम व कैलीमर प्वाइंट, काजूवेली, रामनद (तमिलनाडु), गोवा, कच्छ की खाड़ी (गुजरात), कुन्दापुर (कर्नाटक), अचरा रत्नगिरि, विक्रौली, कुंडालिका रडाना, मालवन, श्रीवर्धन (महाराष्ट्र) और बेम्बानद (केरल) इनमें प्रमुख हैं। दो कच्छ वनस्पतियां भारत में लुप्त होने के कगार पर हैं। इनमें से एक है तमिलनाडु के पिछावरम में पाई जाने वाली राइजोफोरा अन्नामलाय और दूसरी है उड़ीसा के भीतर-कणिका में पाई
जाने वाली हेरीटेरिया कनिकेंसिस। यूनेस्को के जीवमंडलीय के आरक्षित क्षेत्रों की विश्व सूची में पश्चिम बंगाल के सुन्दरवन को शामिल किया गया है। यह देश का सबसे बड़ा कच्छ (मैंग्रोव) वनस्पति क्षेत्र है। न्यू सेवन वंडर्स (सात प्राकृतिक आश्चर्यों की पहचान के लिए) मनोनीत एकमात्र स्थल 'सुन्दरवन' ही है।राष्ट्रीय कच्छ वनस्पति और तटीय जैव विविधता अनुसधान संस्थान पश्चिम बंगाल के सुंदरवन में प्रस्तावित है।

बहुउद्देशीय नदी घाटी परियोजना

1. दामोदर घाटी परियोजना : यह स्वतंत्र भारत की प्रथम बहुउद्देशीय परियोजना है। झारखंड और प. बंगाल राज्यों में फैली दामोदर घाटी का सं. रा.अमेरिका की टेनेसी घाटी परियोजना (1933) के आधार पर संयुक्त विकास के लिए 1948 में दामोदर घाटी निगम (DVC) की स्थापना की गई। दामोदर नदी छोटानागपुर की पहाड़ियों से निकलकर प. बंगाल में हुगली नदी से मिल जाती है। इस परियोजना में तिलैया, कोनार, मैथान तथा पंचेत पहाड़ी पर बांध बनाए गए हैं जबकि बोकारो, दुर्गापुर, चन्द्रपुर तथा पतरातू में ताप विद्युत गृहों का निर्माण किया गया है।

2. भाखड़ा नांगल परियोजना : पंजाब-हिमाचल प्रदेश में सतलज नदी पर बनाई गई यह देश की सबसे बड़ी बहुउद्देशीय योजना है। भाखड़ा बांध संसार का सबसे ऊँचा गुरुत्वीय बांध (226 मीटर) है। बांध के पीछे बनी झील का नाम गोविन्द सागर (हिमाचल प्रदेश) है। हिमाचल प्रदेश, पंजाब, हरियाणा, राजस्थान और केन्द्रशासित प्रदेश दिल्ली को इस परियोजना का लाभ मिला है।

3. रिहन्द बांध परियोजना – यह उत्तर प्रदेश में सोन की प्रसिद्ध घाटी में उसकी सहायक नदी रिहन्द पर बनाया गया है। इस बांध के पीछे 'गोविन्द बल्लभ पन्त सागर' नामक एक कृत्रिम झील बनायी गई है जो भारत की सबसे बड़ी कृत्रिम झील है। यह मध्य प्रदेश तथा उत्तर प्रदेश की सीमा पर स्थित है।

4. हीराकुंड बांध – यह उड़ीसा में संभलपुर के निकट महानदी पर बनाया गया है तथा संसार का सबसे लंबा बांध है।

5. गंडक परियोजना – यह भी नेपाल के सहयोग से पूरी की गई है। इसमें मुख्य नहर गंडक पर बने वाल्मिकी नगर बैराज से निकाली गई है।

6. कोसी परियोजना – यह बिहार राज्य में नेपाल के सहयोग से पूरी की गई है। विनाशकारी बाढ़ों के कारण कोसी को 'उत्तरी बिहार का शोक' कहा जाता है। मुख्य नहर कोसी पर बने हनुमान नगर बैराज (नेपाल)
से निकाली गई है। भविष्य में इस योजना के शक्तिगृहों को दामोदर घाटी परियोजना के शक्तिगृहों से मिलाकर नेटवर्क बनाने की भी योजना है।

7. इंदिरा गाँधी (राजस्थान नहर) परियोजना – इस परियोजना में रावी और व्यास नदियों का जल सतलज नदी में लाया गया है। व्यास नदी पर पौंग नामक बांध बनाया गया है। इसका मुख्य उद्देश्य नए क्षेत्रों को सिंचित करके कृषि योग्य बनाना है। यह संसार की सबसे लंबी नहर है जिससे उत्तर-पश्चिमी राजस्थान के गंगा नगर, बीकानेर तथा जैसलमेर जिलों की सिंचाई की जा सकती है। मुख्य नहर को इंदिरा नहर के नाम से जाना जाता है। यह भारत का सबसे बड़ा कमान क्षेत्र विकसित करता है।

8. चंबल परियोजना – यमुना की सहायक चम्बल नदी के जल का उपयोग करने के लिए मध्य प्रदेश व राजस्थान में यह परियोजना संयुक्त रूप से बनाई गई है। इस परियोजना के अन्तर्गत मध्य प्रदेश में गाँधी सागर बांध तथा राजस्थान में राणा प्रताप सागर बांध, जवाहर सागर बांध तथा कोटा बैराज बनाए गए हैं। इस परियोजना का प्रमुख उद्देश्य चंबल नदी
की द्रोणी में मृदा का संरक्षण करना है।

Meghwal's IAS